

**Code No.: MR-41**

Total No. of Questions : 5

Total No. of Printed Pages : 2

**स्नातकपरीक्षा:- २०१५**

**बि.ए. - विद्वन्मध्यमा - तृतीयवर्षः**

**शास्त्रम् - विशिष्टाद्वैतवेदान्तशास्त्रम्**

**भागः - १, पत्रिका - ३**

**विषयः - उपनिषद्भाष्यम्-४ (बृहदारण्यक-सम्पूर्णम्)**

**दिनाङ्कः - 31-3-2015**

**गरिष्ठाङ्काः - १००**

**समयः - 10.00 A.M. to 1.00 P.M.**

**Max. Marks - 100**

**I. एकेन वाक्येन उत्तरं लिखत।**

**10 × 1 = 10**

१. कस्य अङ्गभूतः अश्वः ?
२. को नाम मेधः ?
३. आत्मन्वी स्यामिति कः ?
४. सुखं कस्य वेदनस्य फलं ?
५. “भाणिति” कीदृशः आत्मा शब्दं अकरोत् ?
६. कस्य पूर्णामत्वं ?
७. का नाम अतिसृष्टिः ?
८. अबलीयान् बलीयांसं येन आशंसते ?
९. जीवः केषां भूतानां लोकः ?
१०. कर्म केन करोति ?

**II. भाष्यसम्मतं अर्थं विलिखत।**

**10 × 1 = 10**

- |                  |                 |
|------------------|-----------------|
| १. मोहः।         | २. धीरः।        |
| ३. विरजः।        | ४. अविचिकित्सः। |
| ५. सैन्धवघनः।    | ६. पूर्णमदः।    |
| ७. पूर्णमदः अदः। | ८. दयध्वं।      |
| ९. मनोमयः।       | १०. अधिपतिः।    |

**Code No.: MR-41**

**III. रिक्तस्थानानि पूरयत।**

**5 × 2 = 10**

१. पुरसंज्ञे शरीरेऽस्मिन् ..... व्यत्ययेन प्रयुज्यते।
२. तस्मात् पद्मात् समभवत् ..... सर्वभूतात्मकृत्।
३. तस्य रूपमभूत् द्वेधा ..... मिथुनं समपद्यत।
४. शतरूपाश्च तां नारीं ..... पत्नीत्वे जगृहे प्रभुः।
५. कुतः सृष्टमिदं सर्वं ..... तंमेब्रूहि पितामह।

**IV. टिप्पणीः आरचयत (पञ्चानामेव)।**

**5 × 6 = 30**

१. जगत्सृष्टेः लीलारस एव प्रयोजनम्।
२. स त्रेधात्मानं व्याकुरुत।
३. सामस्वरे स्वत्ववेदन प्रकाराः।
४. पुरुषशब्द प्रकृति निमित्तम्।
५. सैषा ब्रह्मणोऽतिसृष्टिः।
६. परमात्मन एव सर्वनामरूपवत्त्वं।
७. तदेतन्मूर्तं यदन्यत् वायोः।
८. “आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो निदिध्यासितव्यः”।
९. मधुविद्या आख्यायिका।
१०. “यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते”।

**V. समाधत्त (चतुर्णामेव)।**

**4 × 10 = 40**

१. उद्रीथशब्दः केवलोद्रीतपरः उत उद्रातृगीयमानोद्रीतपरः – विमृशत।
२. साङ्ख्यस्मृतिः कुतः नानुरोद्धव्या – विशदयत।
३. प्राणस्यात्मोपकारान् स्पष्टयत।
४. जीवस्य प्राणव्यतिरेकत्वं यथाभाष्यं साधयत।
५. जैनमतस्वरूपमुपवर्ण्य असामञ्जस्यं उपपादयत।
६. ग्रहातिग्रहयोः स्वरूपं प्रपञ्चयत।
७. वायोरेव व्यष्टिसमष्ट्यात्मकत्वं प्रतिपादयत।